पढ़ाई-लिखाई के मेरे नए अनुभव

वान्या गुप्ता

महामारी के कारण अब हम ऑनलाइन कक्षाओं की ओर स्थानांतरित हो गए हैं। सामान्य स्कूल की तुलना में ऑनलाइन कक्षाएँ पूरी तरह बेहतर या ख़राब नहीं हैं, पर वे कुछ अलग हैं। वे कुछ मायनों में फायदेमन्द हैं और कुछ में हानिकारक।

इसका पहला लाभ यह है कि हमें शिक्षकों द्वारा ऑनलाइन साझा किए गए अध्यायों के नोट्स और अतिरिक्त अभ्यास नोट्स प्राप्त हो जाते हैं। इससे यह मदद मिलती है कि हमें अब अपनी कॉपी और रजिस्टरों में लम्बे–लम्बे नोट्स लिखने नहीं पड़ते। हम अपने अध्यापकों द्वारा दिए गए महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं और सरलीकृत स्पष्टीकरण को ध्यान में रखकर अपना कार्य कुशलता से कर लेते हैं। यह उन विद्यार्थियों के लिए अधिक लाभदायक है जो स्व-अध्ययन को ज्यादा महत्व देते हैं, क्योंकि उन्हें अब इसके लिए अधिक समय मिल जाता है। इसके अलावा, हम अभी भी अपने पाठ्यक्रम से पूरी तरह जुड़े हुए हैं, यह बहुत लाभदायक और सुविधाजनक है, क्योंकि अगर लॉकडाउन के दौरान ऑनलाइन कक्षाएँ नहीं होतीं तो हम अपने पाठ्यक्रम को पूरा करने या कुछ भी सीख पाने में सक्षम नहीं होते।

यात्रा पर लगने वाले समय (घर से स्कूल जाना और आना) की भी बचत हुई है, जिसका इस्तेमाल हम दूसरे कार्यों में कर सकते हैं। इससे भी महत्त्वपूर्ण बात यह है कि अगर हम अपना कार्य समय पर पूरा नहीं भी करें, तो शिक्षक हमें सजा नहीं दे पाएँगे!

असुविधा के रूप में देखें, तो कई शिक्षकों को इस नई अध्ययन पद्धति के साथ सामंजस्य स्थापित करने में विभिन्न परेशानियों का सामना करना पड़ा। जैसे गैज़ेट के उपयोग में या फोन व लैपटॉप की सेटिंग सम्बन्धी समस्या का होना। जैसे, एक शिक्षक काग़ज़ पर कुछ लिखते समय अपना फ़ोन हाथ में पकड़े हुए थे जिसके कारण उनकी लिखावट बिल्कुल स्पष्ट नहीं दिख पा रही थी। कई विद्यार्थियों को भी नेटवर्क सम्बन्धी दिक़्क़त का सामना करना पड़ा। जैसे स्क्रीन का स्थिर हो जाना, नेटवर्क स्लो हो जाना, या फिर नेटवर्क टूटने से कक्षा से बाहर हो जाना इत्यादि।

एक और कारण से भी ऑनलाइन कक्षाएँ अहितकर हैं। इसके कारण विद्यार्थी बहुत अधिक समय तक इलेक्ट्रानिक गैज़ेट के सम्पर्क में रहते हैं। कक्षाओं में शामिल होने, विभिन्न परियोजनाओं और गृह-कार्य को वर्ड डॉक्यूमेंट में लिखने और जमा करने के लिए हमें दिन भर लैपटॉप के सामने बैठना पड़ता है। इसके बाद दूसरे ट्यूशन भी लेने होते हैं और वह भी ऑनलाइन ही होते हैं। इससे हमारे मानसिक व शारीरिक स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है – जैसे आँखों की रोशनी और बैठने की मुद्रा यानी पाश्चर को नुकसान पहुँचना।

कई शिक्षकों का मानना है कि क्योंकि हम पूरा दिन घर पर बैठे हैं तो हमारे पास बहुत सारा ख़ाली समय है,इसलिए वे हमें बहुत सारा गृह-कार्य दे देते हैं। कभी-कभी तो यह स्कूल से मिलने वाले गृह-कार्य से भी दोगुना होता है, जो पहले भी बहुत होता था। इसके अलावा, हमें ट्यूशन में भी ज़्यादा गृह-कार्य मिलता है। कुछ बच्चे आकाश व विद्या मंदिर क्लासेस जैसे संस्थानों से भी कक्षाएँ लेते हैं जो तीन से चार घण्टे तक की होती हैं। इस सबमें बहुत समय लगता है इसी के साथ स्कूल और ट्यूशन में होने वाले टेस्ट की तैयारी का तनाव भी जुड़ा रहता है। हम आशा करते हैं कि शिक्षक टेस्ट अनुसार हमें गृह-कार्य देंगे और कार्य की मात्रा को कम करेंगे।

यह बात सही है कि हमारे पाठ्यक्रम में काफ़ी कमी की गई है। टेस्टों में सिर्फ लघु प्रश्नों या बहु-विकल्पी प्रश्नों (MCQ) को ही पूछा जाता है, लेकिन इस वजह से ऐसे बहुत सारे महत्त्वपूर्ण अध्याय जो आगे की समझ के आधार के लिए अति आवश्यक हैं, वह टेस्ट का हिस्सा नहीं बन पाते। इसका अर्थ यह है कि हम अधिक ज्ञान अर्जन नहीं कर पा रहे हैं और सिर्फ़ साधारण अध्यायों को ही पढ़ रहे हैं जिनसे टेस्टों में लघु प्रश्न सरलता से पूछे जा सकते हैं। इसके अलावा, जैसा कि हम सभी को लघु-उत्तर लिखने और टेस्टों में बहु-विकल्पी प्रश्नों की आदत पड़ती जा रही है, तो सम्भव है कि उच्च शिक्षा में जहाँ निश्चित समय में दीर्घ उत्तर लिखने होते हैं, हम लिखने में सक्षम न हों क्योंकि हमें ऐसा करने का अभ्यास नहीं होगा।

इसका एक और नुकसान यह है कि बहुत से विद्यार्थी कक्षाओं में ध्यान नहीं देते और जब उन्हें शिक्षक कैमरा चालू करने का आदेश देते हैं तब उन्हें बिल्कुल अच्छा नहीं लगता। क्योंकि वे ऑनलाइन कक्षाओं को खाली समय मानते हैं और इधर-उधर घूमना चाहते हैं। इस वजह से शिक्षक यह सुनिश्चित करने में असमर्थ रहते हैं कि सभी विद्यार्थी कक्षा में ध्यान दे रहे हैं। यह एक बड़ी दिक़्क़त है क्योंकि जब हम कक्षाओं में होते हैं तब

शिक्षक कम से कम यह जानते हैं कि कौन सुन रहा है और कौन नहीं। कक्षाएँ भी गैर-संवादात्मक बन गई हैं। शिक्षक शिकायत करते हैं कि उन्हें लगता है वे एक म्यूटेड स्क्रीन को पढ़ा रहे हैं, जहाँ बमुश्किल ही कोई जवाब देता है।

अन्ततः मेरे अवलोकन के अनुसार ऑनलाइन कक्षाओं के फ़ायदे से ज़्यादा नुक़सान हैं। मुझे स्कूल से प्यार है और चाहती हूँ सीखने में मज़ा आए। मैं चाहती हूँ कि काश इन समस्याओं का समाधान किया जा सके। मुझे अपने सामान्य स्कूल में वापस जाने की लालसा है।

वान्या गुप्ता दिल्ली पब्लिक स्कूल में नौवीं कक्षा की छात्रा हैं। वह अपने स्कूल के नाटक तथा पाश्चात्य संगीत क्लब की सदस्य हैं। उनसे **vanyagupta0707@gmail.com** पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** सात्विका ओहरी

कोई समाज कितना भी समृद्ध और विकसित क्यों न हो, इस महामारी से पहले उसने अपनी स्कूली शिक्षा को पूरी तरह से प्रौद्योगिकी पर आधारित नहीं किया था, जो इस बात का एक स्पष्ट संकेत है कि शिक्षा के लिए प्रौद्योगिकी के उपयोग के बारे में एक परिपक्व शिक्षा प्रणाली क्या सोचती है।

- बी.एस. ऋषिकेश, 'न्यू नॉर्मल पर उठते प्रश्न : ऑनलाइन अधिगम', पेज 25